संग्रथन

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

संरक्षक मण्डल

आचार्य राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा, 'हिन्दी-विश्व गौरव-ग्रन्थ' शृंखला के प्रणेता एवं प्रकाशक, ग्वालियर (म.प्र.), मो:९४२५११००७७
प्रो.(से.नि.).डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर'प्रेमी',विश्वविख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्,बंगलूर,मो:९८८०७-८१२७८
श्री विमलकुमार बजाज,प्रखर समाजसेवी,व्यवसायी एवं अध्यक्ष, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी,शिलॉंग,मेघालय,मो:९४३६१-११८९१
श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र) डॉ.उमाकुमारी.जे.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ़.हिल्डा जोसफ़
डॉ.एन.एस.राधाकृष्ण पिल्लै
डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी
डॉ.श्रीलता.के
डॉ. सुमा.एस
प्रोफ़.ए.मीरा साहिब
श्री.के जनार्दनन नायर
प्रोफ़.एन.सत्यवती
डॉ. सुनिलकुमार.एस
डॉ.सोफ़िया राजन

इस अंक में...

संपादकीय : केरल हिन्दी साहित्य मंडल का प्रमुख स्तंभ ढह गया।	डॉ.वी.वी.विश्वम्	5-6
मन की बात (मई २०२२)	श्री नरेन्द्र मोदी	7-13
रह जाएगी मैत्री, रह जाएगी करुणा.....	डॉ.ए.अरविन्दाक्षन	14-15
भाषा के विविध रूपों की प्रयुक्ति (गतांक से आगे)	प्रो.(डॉ).आर.जयचन्द्रन	16-19
शैलेन्द्र सागर के कहानी संग्रह " 'द्वंद' तथा अन्य कहानियाँ" में मुख्य बोध का सामाजिक पक्ष	हेमलता	20-25
'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी' में चित्रित किन्नर जीवन	अनु.बी.एस.	26-28
पर्यावरण का असंतुलन : 'कुइयाँजान' उपन्यास के संदर्भ में	डॉ.जिन्सी मैथ्यू	29-34
पानजेंडर : दर्द उपेक्षा तथा घृणा से भरा जीवन-यथार्थ (चुनी गई कहानियों के संदर्भ में)	जितेन्द्र बघेला	34-38
यशपाल की कहानियों में मार्क्सवादी जीवन दृष्टि का प्रभाव	डॉ.वीणा.के.	38-42
राजभाषा कार्यान्वयन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का योगदान	डॉ.रम्या.जी.एस.नायर	42-45
विभाजन के अनदेखे पहलू : 'मुट्ठी भर कांकर' और 'घास गोदाम'	डॉ.अंजली.एस.	46-52
प्रसूति (कविता)	डॉ.नवीना नरितूकिल	53
प्रश्नोत्तरी	जुगनू	54

मुखचित्र - स्व.डॉ.टी.एन.विश्वंभरन

विभाजन के अनदेखे पहलू : 'मुट्ठी भर कांकर' और 'घास गोदाम'

डॉ.अंजली.एच

विभाजन की त्रासदी पर आधारित, उसके विभिन्न पहलुओं को अनावृत करनेवाले अनेक उपन्यास हिन्दी साहित्य में हुए हैं। जगदीशचंद्रजी के दो उपन्यास 'मुट्ठी भर कांकर' और उसकी अगली कड़ी 'घास गोदाम' भी इसी पृष्ठभूमि को लेकर लिखे गए हैं; लेकिन विभाजन पर आधारित अन्य रचनाओं से ये इस दृष्टि में भिन्न हैं कि इनमें मुख्य रूप से उसके दूरव्यापी असर पर प्रकाश डाला गया है। विभाजनोपरांत भारत के शरणार्थी समस्या, शहरीकरण का सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव, नवपूँजीवादी वर्ग का आविर्भाव तथा तज्जन्य आर्थिक समस्याएँ, बदलती हुई राजनैतिक परिस्थितियाँ आदि का विस्तृत विश्लेषण इन दोनों उपन्यासों में हम देख सकते हैं।

विभाजन के फलस्वरूप आए शरणार्थियों को बसाने तथा दिल्ली नगर के विकास के लिए सरकार दिल्ली के पासवाले गाँवों की ज़मीन अवधारित कर लेती है। शहरीकरण की इस तेज़ प्रक्रिया में ग्रामीण जनता के सामने अंधेरा छा जाता है। अपनी ज़मीन को जान से भी प्यारा माननेवाले किसान अपने पुश्तैनी पेशे से वंचित हो जाते हैं तो, वे इसके कारण बने शरणार्थियों को संशय की दृष्टि से देखने लगते हैं। 'मुट्ठी भर कांकर' का एक सुगठित कथानक न होते हुए भी बसई-दारापुर नामक गाँव के जन-जीवन के माध्यम से लेखक विभाजनोपरांत भारतीय जन जीवन के विभिन्न पहलुओं को हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। 'घास गोदाम' में विभाजन के फलस्वरूप तेज़ी से व्याप्त शहरीकरण, तथा उससे उभरी उपभोक्तावादी-नवपूँजीवादी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को अनावृत करने का प्रयास किया गया है। ये दोनों उपन्यास अपने आप में स्वतंत्र भी हैं।

जड़ों से उजड़ी पीढ़ी की त्रासदी:

बसई-दारापुर के प्रह्लाद सिंह पर हुए चीते के आक्रमण से 'मुट्ठी भर कांकर' का आरम्भ होता है। दिल्ली नगर के आस-पासवाले जंगलों और पहाड़ियों की घाटियों को शरणार्थियों को बसाने के लिए काट लेते हैं तो गाँव में जंगली जानवरों का आक्रमण होता है। इस घटना से ही गाँववालों को देश में होनेवाले बड़े-बड़े परिवर्तनों के बारे में सूचना मिलती है। पासवाले शहर और अन्य गाँवों में होनेवाले परिवर्तन उन्हें चौंका देते हैं। शरणार्थियों के रूप में आकर गाँव में छोटे-मोटे व्यापार करनेवालों को वे संशय की दृष्टि से देखते हैं।

विभाजन ने भारतीय जन-मानस में असुरक्षा एवं शंका का बोध पैदा किया। भारत से पाकिस्तान और पाकिस्तान से भारत की ओर शरणार्थियों का प्रवाह होता रहा। लेकिन करोड़ों के स्थानांतरण की कोई सुनियोजित व्यवस्था या योजना सरकार की तरफ से नहीं बनायी गई थी। अपनी जड़ों से उखड़कर

...कता की प्रयोगशाला में जैनेन्द्र के उपन्यासों के नारी पात्र-डॉ.अजय कुमार 91-93
...लेखिकाओं की आत्मकथा में नारी जीवन-अंजु पटेल&डॉ.एन.पी.प्रजापति 94-95
...उपन्यास 'नदी सम जैसी लड़की' में संघर्ष करती ग्रामीण नारी-डॉ.[illegible] 96-97
...डकरी मुक्तिदाता-डॉ.जितेंद्र सावजी वाघडे 98-99

[illegible] विमर्श

...[illegible]-डॉ.बी.कृष्ण 100-101
...में दलित आक्रोश-डॉ.विष्णु सरवदे 102-103
...के अस्मिताओं की वैचारिकी-प्रा.डॉ.विश्वनाथ किशन भालेराव 104-105
...दर्शबोध पैदा करती है दलित कहानियां-डॉ.प्रवीण कुमार&डॉ.कौशल कुमार 106-107
...आम्बेडकर का दलित चिंतन-डॉ.रूपेश कुमार 108-113
...वर्ग की फटेहाल जिंदगी से बाहर निकलने का रास्ता सुझाया है-सुनील कुमार 113-115
...समाज में दलित वर्गों का उत्थान-सुमलक अपुम&शिवम चतुर्वेदी 115-116
...समाज' में राजनीतिक व दलित विमर्श-डॉ.दीपक कुमार 117-118
...में दलित चेतना-डॉ.कृष्ण बिहारी रॉय 118-119
...के चिंतन में जाति एवं जेंडर-शरद जायसवाल&वीरेन्द्र प्रताप यादव 119-120

आदिवासी विमर्श

...क साहित्य-डॉ.कृष्णा डी लमाणि 121-123
...न और गांधी-डॉ.अन्ना राम मीना 124-125
...-भारती लक्ष्मी पाल 126-127
...साहित्य-अशर्फी लाल 128
...गाथा 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी'-डॉ.अंजली एस. 129-130
...संघर्ष-डॉ.उषा पी.एस. 130-134
...विकास में झारखण्ड के आदिवासियों की भूमिका और उनकी वर्तमान स्थिति-हिमांशु प्रभाकर 134-136
...और बाज़ार'-मनीषा डी. के.&डॉ.सिंधु टी. आई. 136-138
...उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता'/'सोन पहाड़ी' में अभिव्यक्त आदिवासी विस्थापन एवं पुनर्वास-निम्मी सलोमी किन्डो 139-140
...निक अध्ययन की आवश्यकता-प्रा.सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण 141-142
...में डॉ.बाबासाहब आंबेडकर का योगदान-डॉ.मनिश कान्हा चव्हाण 142-143
...समुदाय की भाषा-डॉ.गणशेटवार साईनाथ नागनाथ 144-145

किन्नर विमर्श

...से किन्नर पुनर्वास की कथा 'तीसरी ताली'-डॉ.सीमा चन्द्रन 145-147
...और किन्नर जीवन-डॉ.लक्ष्मीकान्त चंदेला 148-149
...महराज,किन्नर,गलती जो माफ़ नहीं,बीच के लोग,पन्ना बा,नेग,कहानियों के विशेष संदर्भ में)-दीप्ति दास 150-151

विविध विमर्श

...में डॉ.अम्बेड़कर का आधुनिक चिंतन-ड़ॉ.गोपाल लाल मीना 151-152
...अनुवाद का...-डॉ.वंदना रानी 153-155
...अनुवाद में उद्धरित सांस्कृतिक प्रतीकों की समस्या-डॉ.लखिमा देओरी 155-157
...पौराणिक संस्कृति के विशिष्ट तत्व:एक नवीन अध्ययन-नरेश कुमार 157-159
...-पत्रों में...कोरोना संबंधी शब्दावलियों का समीक्षात्मक अध्ययन-इस्तेखार अहमद&डॉ.अख्तर आलम 160-161
...शिक्षा में...की भूमिका-डॉ.कुलराज व्यास 162-164
...सामुदायिक रेडियो "कमाऊं वाणी" का विकास व चुनौतियां-राजेन्द्र सिंह क्वीरा 165-166
...की प्रासंगिकता-मोनिका राज 167-169
...अनुसूचित जनजाति...विकास में बाबासाहब डॉ.अम्बेडकर का योगदान-डॉ.संजय कुमार 169-171
...में...मानवाधिकार की भूमिका-राजपाल सिंह यादव 172-175
...भारत में बाल...समाजिक समस्या:एक अध्ययन-डॉ.धनंजय शर्मा 175-177
...जनजातियों की व्यवसायिक स्थिति,जीवन स्तर एवं उपभोग स्थिति का आर्थिक अध्ययन:(गिरिडीह जिले के विशेष सन्दर्भ में)...कुमार&डॉ.नमिता शर्मा 177-180
...मातृभाषा की...राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020-प्रभाकर कुमार 180-181
...महाभारत...दासता-एक ऐतिहासिक अध्ययन-डॉ.रुबी तबस्सुम 182-183
...हिमाचल प्रदेश...जनजाति:आर्थिक एवं सामाजिक परिदृश्य-भरत सिंह &विपुल शर्मा 184-185
...प्राचीन भारतीय...पर्यावरणीय अवधारणा-श्वेता तवर 185-187
...कुमाऊँ मण्डल के...जनपद में संचालित विभिन्न पेंशन योजनाओं का...तथा लक्षित वर्गों पर प्रभाव का मूल्यांकन-डॉ.रीना रानी मिश्रा 188-189 189-192

ग्लोबल गांव का देवता, गायब होता देश, गूंगी रुलाई का कोरस आदि साहित्यकारों ने उपन्यास लिखें हैं। रणेंद्र द्वारा लिखा गया ग्लोबल गांव के देवता में वहां की जनजीवन पर किस प्रकार से शोषण किया जा रहा है उसका एक संवाद इस प्रकार है-"नष्ट करने की प्रक्रिया तो आज भी जारी है। जमीन और बेटियां चुप–चुप शांत–शांत रोज छीनी जा रहे हैं।" इन उपन्यासों के अलावा गैर-आदिवासी साहित्यकारों ने भी अनेक उपन्यास लिखे हैं जैसे देवेंद्र अवस्थी-रथ के पहिए, उदय शंकर भट्ट- सागर लहरें और मनुष्य, रांगेय राघव-कब तक पुकारूं, राजेंद्र अवस्थी -सूरज किरण की छांव, जंगल के फूल, राकेश वत्स-जंगल के आसपास, संजीव-धार, जंगल जहां शुरू होता है, भगवानदास मोरवाल -कालापहाड आदि साहित्यकारों ने उपन्यास लिखा है। जिस प्रकार आदिवासी साहित्य कारों ने अपने उपन्यास में आदिवासियों के जीवन, संघर्ष, संस्कृति, लोकगीत, सामाजिक ताने-बाने को जितना विस्तृत और जीवनानुभव, यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है उतना गैर-आदिवासी साहित्यकारों ने नहीं वे आदिवासियों के जीवन का संकेत करके या उनके प्रेम से संबंधित प्रसंगों को उभारा है।

आदिवासी साहित्य में कहानी विधा एक महत्वपूर्ण विधा है जो की कहानियों के माध्यम से आदिवासियों के जिंदगी को और वहां के स्त्रियों की दशा को प्रस्तुत करती है। रोज केरकेट्टा की कहानी भंवर नारी की दशा विशेष रूप से पुरुष वर्चस्व को दर्शाती है और उनके मुक्ति का मार्ग दिखाती है। पीटर पॉल एक्का की रचना राजकुमारों के देश में एक ऐसी कहानी है जिसमें मंगरु काका जैसे स्वाभिमानी नायक को केंद्र में रखा गया है। डॉ मंजु ज्योत्स्ना की कहानी प्रायश्चित, शंकर लाल मीणा का कहानी संग्रह आखिर कब तक, केदार मीणा की एक कहानी कामरेड मीणा, इसमें एक युवक को नक्सलवादी के रूप में चित्रित किया गया है। रामधन लाल की कहानी अप्रत्याशित, हरिराम मीणा की कहानी स्वालिया व पांच्या के भूत, काफी चर्चा में रही है। इन सभी कहानियों में आदिवासियों के जीवन संघर्ष जल, जंगल, जमीन को लेकर विभिन्न प्रकार के संघर्ष को दिखाया गया है। जो न्याय के लिए सरकार और न्यायालय से गुहार लगाते हैं।

आदिवासी साहित्य में नाटक भी लिखे गए हैं। मगर बहुत कम मात्रा में दिखाई पड़ता है। सुनील कुमार 'सुमन' का एक चर्चित नाटक है— एक बार फिर है। जिसमें आदिवासी समाज के अनेक समस्याओं को दर्शाया गया है। जैसे माओवाद, सरकार के प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण दिखाया गया है और आदिवासियों और दलितों के बीच मतभेद पैदा करने जैसे पक्षों को दिखाया गया है। प्रभात का नाटक— कालीबाई एक साहसी युति की कहानी को दर्शाता है। नाटक में भी आदिवासियों के द्वारा किए गए कार्य को उजागर करता है। आदिवासियों द्वारा यात्रा वृतांत भी लिखे गए हैं जैसे हरिराम मीणा साइबर सिटी से नंगे आदिवासियों तक, जंगल जंगल जलियांवाला भी लिखा है जिसमें देश के विभिन्न आदिवासियों के बारे में रोचक जानकारी प्राप्त होती है।हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श अनेक विधाओं में लिखा गया। जिसमें कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना आदि विधाओं में लिखा है। जोकि इन सभी विधाओं में आदिवासी अपने जल, जंगल, जमीन और जीवन के अस्तित्व की लडाई लडते हुए दिखाई देते हैं। क्योंकि सरकार के हस्तक्षेप द्वारा कारपोरेट को उनके जमीनों को दिया जा रहा है। आदिवासी अपने जल, जंगल, जमीन और जीवन के लिए संघर्ष करते आ रहे हैं। प्राकृतिक संसाधन ही उनकी अपनी पूंजी है। इस को बचाए रखने के लिए सरकार और कारपोरेट से इनका संघर्ष होता रहता है। गैर—आदिवासी और शासन से उपजा शोषण के विरुद्ध आदिवासी अस्मिता की पहचान एवं उनके खिलाफ जारी प्रतिरोध का साहित्य आदिवासी विमर्श है। आदिवासी जल, जंगल, जमीन और जीवन की रक्षा के लिए सम्मानपूर्ण जीवन एवं आत्मनिर्णय के अधिकार की मांग करता है। आदिवासी अपने इन्हीं संघर्षों जीवनानुभव को विभिन्न विधाओं के माध्यम से अपने साहित्य में स्थान देते हैं।

****

संदर्भ:-

1 शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 2[illegible]
2 आदिवासी दुनिया, हरिराम मीणा, प्रकाशक— राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, पृष्ठ संख्या 8
3 वही— पृष्ठ 216
4 गोधड मराठी महार, अनुवादक-निशिकांत ठकार,कविता-पहाड़ हिलने लगा- वाहरू सोनवणे
5 नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द— निर्मला पुतुल, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली पृष्ठ संख्या 30

आदिवासियत की महागाथा 'बाघ और सुग

विभागाध्यक्षा
हिंदी स्नातक
महाराजा कॉलेज

"कोइ आकाश या पृथ्वी की ऊष्मा कैसे खरीद या बे
यह बात तो विचित्र लगती है | हवाओं की ताज़गी य
जब हम मालिक ही नहीं, तो तुम उन्हें हमसे कैसे ख
आज से करीब डेढ़ शति पूर्व,1854 में साम्राज्य
ताकतों के खिलाफ उठे सिएटल के रेड इंडियन आदि
शब्द दुनिया भर के आदिवासी जीवन दर्शन के नि
सबसे विकसित और परिष्कृत देश अमेरिका के
आदिवासियों की ज़मीन खरीदकर देश के साथ जोड़ने
के मुखिया के सम्मुख रखा तो उसके प्रत्युत्तर में लि
आदिवासी स्वत्वबोध की गहनता और उदात्तता दिख
इस तथाकथित परिष्कृत दुनिया के वैचारिक बौनेपन
तथा प्रकृति के एक अनिवार्य अंग के रूप में देखने
हृदय विशालता आदिवासी दर्शन का मूल तत्व है
दुनिया ने इस उदात्त चिंतन को अनदेखा कर दिया | आ
पशुवत जीवन बितानेवाले अपरिष्कृत जन-जाति के
को हाशिए पर छोड़ दिया गया है | वास्तव में जीवन
और उसमें निहित समस्त चराचरों के बीच एक के रू
विनम्र सहजीविता का भाव तथा निस्वार्थ मानसिकता
को विकास की अंधी दौड़ से अपने को बचा रखने क
उनके जीवन की धुरी है|सिएटल के मुखिया का यह ल
आदिवासी चेतना को समेटनेवाली प्रकृति और मनुष्
की अभिव्यक्ति है तो अनुज लुगुन की कविता 'बाघ
बेटी' उसी दर्शन की सशक्त नींव पर खड़े होकर अ
वर्तमान एवं भविष्य को, वर्तमान की चुनौतियों
प्रतीक्षाओं को शब्दबद्ध करने का सफल प्रयास है|
आदिवासी दर्शन-इस कविता के माध्यम से कवि
तथा समस्त चराचरों को अपना सहजीवि मानता है
घोषित करता है | प्राकृतिक संसाधनों का कृतज्ञतापूर्वक
उपयोग करने तथा आनेवाली पीढ़ी के प्रति अपने दायि
सन्देश देता है | अन्यथा मानवीय सभ्यता के सर्वना
देता है | आधुनिक विज्ञान और उससे संचालित 'वि
सम्पूर्ण जगत और सृष्टि के केंद्र में रखते हुए उपभोक्त
प्रश्रय दिया पर प्रेम और सहन से सिंचित आदिवा
के एक अंश के रूप में पाते हैं | समस्त चराचर उनके स
पालन पोषण वे अपना दायित्व मानते हैं | पृथ्वी का श
तक वे नहीं करते | संचित करके रखना उनका स्वभाव

"जंगल केवल जंगल नहीं है
नहीं है केवल दृश्य /वह तो एक दर्शन
पक्षधर है वह सहजीविता का
दुनिया भर की सत्ताओं का प्रतिपक्ष है

स्वयं जीने और दूसरों को जीने देने के इस दर्शन में प्र
लोभ नहीं, बल्कि समरसता का भाव है | शोषण, युद्ध
परिचित नहीं हैं | इन दर्शनों से संचालित आदिवासियों
गयी | उनके समाज में स्त्री केंद्र में रही | लिंगपरक भे
आदिम निवासियों की सोच के बाहर है मानव
इतिहास से कहीं पुराना है आदिवासियों का इतिहास |
और इतिहास लिपिबद्ध नहीं रहे | संवाद का माध्यम रहा
हृदयों के बीच के आत्मीय संवादों में लिखित दस्तावे

UGC CARE Listed & PEER Reviewed/Refereed Journal

अपनी माटी

अपनी माटी

June 2022

फणीश्वरनाथ रेणु विशेषांक : अनुक्रमणिका

सम्पादक: अपनी माटी बुधवार, जून 29, 2022

फणीश्वरनाथ रेणु विशेषांक

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

- रूप-कुरूप का संवदिया / मनीष रंजन

समीक्षा

- रेणु का जनपद / सं. गजेन्द्र पाठक - डॉ. भावना

इस बार आलाप थोड़ा लंबा है

- मैला आंचल उपन्यास में चित्रित लोकगीत - डॉ. प्रकाश चंद
- संगीत में बातें करती रेणु की कहानियाँ - वीणा शर्मा
- मैला आँचल में लोकगीतों की अर्थवत्ता - डॉ. प्रमोद कुमार प्रसाद
- हिंदी के 'मैला आँचल' और असमिया के 'नोई बोई जाय' आंचलिक उपन्यासों में अभिव्यक्त लोकगीतों का तुलनात्मक स्वरूप - टिंकू छेत्री
- 'मैला आँचल' के गीतों में राजनीति - डॉ. पवनेश ठकुराठी

देहाती दुनिया से आस बची हुई है

- स्वातंत्र्योत्तर ग्राम्य अंचल में भू-राजनीति और जातीय अस्मिता विशेष सन्दर्भ : 'परती परिकथा' - कौशल कुमार पटेल
- 'मैला आँचल' में चित्रित गाँव - डॉ. रीना कुमारी. वी.एल
- रेणु के कथा साहित्य में लोक-कलाओं का स्वरूप - सत्यभामा
- मैला आँचल उपन्यास की आँचलिकता - विवेकानन्द
- फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास और आंचलिकता - विकास कुमार

आधी आबादी की धुन तार सप्तक में गूंजनी चाहिए

- 'मैला आँचल' में 'नारी मुद्दों' की अभिव्यक्ति एवं मूल्यांकन - अरुणा त्रिपाठी
- नारी विमर्श का दस्तावेज़ : रेणु का 'परती परिकथा' - डॉ. उमेश चन्द्र
- फणीश्वरनाथ रेणु के आंचलिक संसार में विचरण करती स्त्री ('मैला आंचल' एवं 'दीर्घतपा' उपन्यासों के विशेष संदर्भ में) - एकता देवी
- फणीश्वरनाथ 'रेणु' के कथा साहित्य में नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण : एक मूल्यांकन - डॉ. सन्तोष विश्नोई
- 'मैला आँचल' में वर्णित नारी समस्याएं - सुनीता

मेरीगंज की माटी पुकारती रही

- आँचलिक उपन्यास परम्परा में 'मैला आँचल' - धर्मवीर
- संवेदना के धरातल पर 'मैला आँचल' - विनीत कुमार वर्मा एवं डॉ. राजेश कुमार तिवारी
- मैला आँचल का संवेदना पक्ष – डॉ. दिनेश्वर कुमार महतो
- आंचलिकता के युग प्रणेता : फणीश्वरनाथ 'रेणु' और मैला आँचल (समकालीन परिदृश्य के विशेष संदर्भ में) - डॉ. जया द्विवेदी

'क' से कविता कब सिखाया जाएगा

- कविता की भूमि पर रेणु - डॉ. प्रमोद कुमार द्विवेदी

प्रेम में ढाई आखर पर्याप्त है

- प्रेम की 'तीसरी कसम' - प्रो. संजय कुमार
- हिंदी जगत का हिरामन : फणीश्वरनाथ रेणु - कु. मोनिका दुबे
- एक पुस्तकाय का कथा संसार - डॉ. अनिल [illegible]
- [illegible] की [illegible] संवेदनशीलता और स्वानुभूति की भाषा - डॉ. आशुतोष वर्मा

धूल भरा मैला सा आँचल,
गंगा यमुना में आँसू जल,
मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी
भारत माता ग्रामवासिनी।" 1

रेणु के उपन्यासों के माध्यम से पाठक वर्ग ने हिन्दुस्तान के एक ग्रामीण अंचल को उसके प्रकृत रूप में देखा और अनुभव किया। उनके उपन्यासों में चित्रित गाँवों की समस्याएँ आज के प्रत्येक भारतीय गाँव की समस्याएँ हैं। हिन्दी उपन्यासों का इतिहास में गोपाल राय ने लिखा है कि "भारत की राजधानी से दूर, देश के सर्वाधिक पिछड़े राज्य बिहार के सर्वाधिक पिछड़े जिले पूर्णिया के उत्तर में मेरीगंज नामक गाँव से जुड़ा हुआ है जो केंद्र से बहुत दूर होने के कारण भौतिक प्रगति से नितांत पिछड़ा हुआ है। इस सुदूर और अत्यंत पिछड़े हुए अंचल को उसकी संपूर्णता में प्रस्तुत करने के लिए रेणु ने एक ऐसे कथा शिल्प और भाषा का इस्तेमाल किया है जो इससे पूर्व हिन्दी उपन्यास के लिए अपरिचित थी।"2

आँचलिक उपन्यास साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु का अपना अलग महत्त्व रहा है। 'मैला आँचल' आँचलिक उपन्यास का महाकाव्य है। उपन्यास के संबंध में स्वयं रेणु ने कहा है- "इसमें फूल भी है, शूल भी है, गुलाल भी है, कीचड़ भी है, चन्दन भी है, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी है।"3 उपन्यास के केंद्र पूर्णिया जिले का मेरीगंज है। जिसमें ब्राह्मण, राजपूत यादव और कायस्थ इत्यादि जातियों के लोग रहते हैं मुख्यतः जाति-पाँति के आधार पर इस गाँव का विभाजन हुआ है। किसान, ज़मींदार, महंत जैसे वर्गों की समस्याओं की ओर भी लेखक ने संकेत दिया है।

डॉ. कुँवरपाल सिंह कहते हैं कि मैला आँचल में रेणु का उद्देश्य किसी अवधारणा चरित्र का निर्माण करना या किसी हीरो की स्थापना करना नहीं है। उन्हें तो मेरीगंज को जैसा कि वह है उसी रूप में पाठकों के सम्मुख रखना है। वहाँ के मनुष्य ही हैं, न कि देवता या दानव। ग्रामीण जीवन में जातिवाद कितना सुदृढ़ है जो राजनीतिक रूप धारण करता जा रहा है तथा वर्ग संघर्ष को कुंठित कर रहा है। इस तथ्य की ओर रेणु ने सर्वप्रथम पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है।"4

'मेरीगंज' की कहानी एक गाँव की कथा न रहकर एक देश की कथा बनती है। पहले महायुद्ध के बाद डब्ल्यू जी मार्टिन ने अपनी पत्नी मेरी के नाम पर 'मेरीगंज रखा था। उपन्यास में जो चीज़ सबसे पहले सामने आती है वह है अंचल के निवासियों की निर्धनता, उनका मानसिक पिछड़ापन, ज़मींदार और तहसीलदार का शोषण, जातिगत आधार पर आपस की फूट आदि। 'मेरीगंज' की सारी धरती दो-तीन आदमियों के अधिकार में है। शेष ग्रामीण या तो खेतिहर मजदूर है या बटाईदारी पर खेती करते हैं उन्हें भरपेट भोजन और तन ढकने के लिए कपड़ा भी नहीं मिलता है और आवास के नाम पर फूस की झोंपड़ी में उनकी सारी ज़िंदगी कट जाती है। इसमें तहसीलदार और धनी किसानों द्वारा गरीब किसानों का शोषण है।

'मैला आँचल' उपन्यास में लगभग 300 पात्र हैं। यहाँ कोई भी केन्द्रीय पात्र या नायक नहीं है। डॉ. प्रशांत, विश्वनाथ प्रसाद, कालीचरण, बालदेव, कमली, लक्ष्मी आदि पात्र सम्मुख हैं

संगठन का संरक्षक मण्डल

न्द्र नाथ मेहरोत्रा, 'हिन्दी-विश्व गौरव-ग्रन्थ' शृंखला के प्रणेता एवं प्रकाशक, ग्वालियर (म.प्र.), मो:९४२५११००७७
).डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर'प्रेमी',विश्वविख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्,बंगलूर,मो:९८८०७-८१२७८
लकुमार बजाज,प्रखर समाजसेवी,व्यवसायी एवं अध्यक्ष, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी,शिलॉंग,मेघालय,मो:९४३६१-११८९१
श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र) डॉ.उमाकुमारी.जे.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ़.हिल्डा जोसफ़
डॉ.एम.एस.राधाकृष्ण पिल्लै
डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी
डॉ.श्रीलता.के
डॉ. सुमा.एस
प्रोफ़.ए.मीरा साहिब
श्री.के.जनार्दनन नायर
प्रोफ़.एन.सत्यवती
डॉ. सुनिलकुमार.एस
डॉ.सोफ़िया राजन

इस अंक में....

संपादकीय : भारत का ७६वाँ स्वतंत्रता दिवस अमृतोत्सव के माहौल में मन की बात (जुलाई० २०२२)	डॉ.वी.वी.विश्वम्	5-6
	श्री नरेन्द्र मोदी	7-13
वी.के.एन.: हास्य को मानवीय भ्रमों पर विलाप तथा अधिनायकवाद के प्रतिरोध का शस्त्र बनानेवाला अनन्य मनीषी लेखक	प्रोफ़.टी.के.प्रभाकरन	14-16
दैनिक भास्कर एवं दैनिक जागरण समाचारपत्र में विज्ञान एवं पर्यावरण समाचारों के पठनीयता तत्वों का अध्ययन	डॉ.जयपाल मेहरा	17-24
'इतिहास चक्र' नाटक और वर्तमान स्थिति	डॉ.रम्या जोसफ़	25-27
नारी जीवन का आत्मसंघर्ष : 'पीली आँधी' के संदर्भ में	डॉ.एन.षाजी	28-31
'अस्थि फूल' के पात्र : एक परिचय	डॉ.आशा.जी.	31-34
'हाइकु' में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल.	35-37
हदों-सरहदों को पार करती स्त्री-शक्ति : 'रेल समाधि'	डॉ.सुमा.एस.	38-42
मोहनराकेश की कहानियों में नारीपात्र : विहंगम दृष्टि	शांति.सी.	42-45
स्वयंप्रकाश की कहानियों के चुनिंदा स्त्री-पात्र	देवीकृष्णा.पी.	46-48
पाठकों के पत्र		48
'शहर सो रहा है' निबंध संग्रह का विश्लेषणात्मक अध्ययन	रोषिनी.एस.	49-51
अस्पृश्यता के प्रति आवाज़ : 'दहाड उठा था सिंह' में	डॉ.मिनी.ए.आर.	51-54

मुखचित्र - लाल किले में तिरंगा फहराते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी

'हाइकु' में चित्रित सामाजिक समस्याएँ

डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल

"शब्द हाइकु/ मिले रंगचित्र से/ बने हाइगा।"

'हाइगा' जापानी पेंटिंग की एक शैली है जिसका शाब्दिक अर्थ है चित्र-कविता यानी 'हाइकु' की चित्रकारी। हाइकु अनुभूति के चरम क्षण की कविता है। सौन्दर्यानुभूति अथवा भावनुभूति के चरम क्षण की अवस्था में विचार, चिंतन, निष्कर्ष आदि प्रक्रियाओं का भेद मिट जाता है। अनुभूति का यह चरम-क्षण प्रत्येक हाइकु कवि का लक्ष्य होता है। हाइकु मूलतः एक जापानी मुक्तक काव्य रुप है, जिसमें पाँच, सात, पाँच अक्षरों के क्रम में तीन पंक्तियाँ होती हैं। जितना कहा गया है उस से बहुत अधिक अनकहा होता है, तो सहृदय को अपनी कल्पना का रंग भरकर पूरा करना होता है। चरम अनुभूति व सघन संवेदनाओं को कलात्मकता के साथ सत्रह अक्षरों में अभिव्यक्ति देना हाइकु की कला है। डॉ.करुणेष भट्ट ने लिखा है कि गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर इसे भारत लाए और अज्ञेय ने इसे हिन्दी में चर्चित किया। टैगोर ने लिखा है– "हाइकु सत्य की ओर इंगित करनेवाली सांकेतिक अभिव्यक्ति है, शेष अर्थ पाठक की ग्रहण शक्ति पर छोड़ दिया जाता है।"[1]

डॉ. सत्यपाल चुध के अनुसार हाइकु अपनी अल्पता में संपूर्णता की झलक देने के संवेदन की कला है। विषय की दृष्टि से हाइकु प्रधानतया कवि का, प्रकृति से हो रहा संलाप है। इसमें प्रकृति के उपलक्ष्य से जीवन के लक्ष्यों को किसी पक्ष विशेष का संकेत कर दिया जाता है। वैसे यह किसी विशिष्ट जीवन-बोधों या स्थिति के तीव्र अनुभूति-क्षणों को व्यक्त करता है....*"भिन्न-भिन्न वस्तु बोधों के स्वरूप एवं प्रभाव के अनुसार हाइकु कभी गागर में सागर है, कभी चैतन्य की चिंगारी, कभी आनंद की तरंग, कभी मधुर दोहक स्फुलिंग और कभी सीपी में मोती।"*[2]

मिल्स का मत है कि "हाइकु मूर्त बिम्बों की कविता है, अमूर्त की नहीं।.....जैसा कि प्रायः कहा जाता है कि अमूर्त चिंतन जापानी रुचि का विषय नहीं रहा है। निश्चय ही कविता वह वस्तु है, जिसमें दार्शनिक चिंतन की खोज की जाए। कवि संसार या जीवन के दुःखों के बारे

१. रवीन्द्रनाथ टैगोर, जापान यात्री, पृ.सं.८६   २. सत्यपाल चुध, वामन के चरण, पृ.सं.७

पुस्तक 59 - [illegible] 6 अंक: सितंबर 2022

केरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका
(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व समीक्षा समिति
प्रो.(डॉ). रवींद्रनाथ एन
प्रो.(डॉ). सुधा बालकृष्णन
प्रो.(डॉ.) जयचन्द्रन आर

परामर्श मंडल
डॉ.तंकमणि अम्मा एस
डॉ.लता पी
डॉ. रामचन्द्रन नायर जे

प्रबन्ध संपादक
गोपकुमार एस (अध्यक्ष)

मुख्य संपादक/संपादकीय दायित्व
प्रो.डी.तंकप्पन नायर

संपादक
डॉ. रंजीत रविशैलम

संपादकीय मंडल
सदानन्दन जी
श्रीकुमारन नायर एम
प्रो.रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

भारत को संवैधानिक मान्यता-प्राप्त कोई राष्ट्रभाषा नहीं चाहिए क्या? - **अधिवक्ता मधु.बी** 6

समकालीन उपन्यासों में शैक्षिक विसंगतियाँ
डॉ.सी.एस. सुचित 7

उपभोगी तराजू में तौलती तालीम और इंसानी जज़्बात
डॉ.शामली एम.एम. 10

सब एक ही एक (कविता) - **के.जी. उण्णिकृष्णन** 12

सूक्ष्म संवेदना के कवि अज्ञेय - **डॉ. चंद्रवदना.जी** 13

हिंदी नाट्य साहित्य में महिला रचनाकारों का योगदान
डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल. 16

डॉ.सुशीला टाकभौरे के उपन्यास 'नीला आकाश' में दलित चेतना - **डॉ.एस.सुनिल कुमार** 22

'ठीकरे की मँगनी' : नारी अस्मिता परंपरा, पहचान और दिशाएँ - **डॉ.जिन्सी मैथ्यू** 24

मीरा नाची : एक किशोरी की अधूरी ख्वाहिशें
कृष्णप्रिया.जे.के. 27

आवाज़ अपनी भी.... (एकांकी) - **विनोद. पी.** 29

देवयानम् (आत्मकथा)
मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा - अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना 38

प्रश्नोत्तरी - **डॉ. एस. श्रीदेवी** 42

मुखचित्र:राज्यस्तरीय हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन

हिंदी नाट्य साहित्य में महिला रचनाकारों का योगदान

डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल.

दृश्य काव्य में नाटक को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। कहा भी गया है 'काव्येषु नाटकं रम्यम्'। समस्त कलाओं की अपेक्षा नाटक सामूहिकता की कला है इसलिए वह मानव जीवन के सबसे अधिक निकट है। अभिनय के माध्यम से समाज एवं व्यक्ति के चरित्रों का प्रदर्शन ही नाटक है। परंपरागत रूप से नाटक कम से कम पाँच अंकों का होना चाहिए, जिसमें आरंभ, विकास, चरम एवं अंत दिखाया जाता है। भारतीय परंपरा में नाटक को 'पंचमवेद' कहा गया है।

नाटक समाज सापेक्ष और मंच सापेक्ष कला होने के कारण उसके सृजन में अनेक चुनौतियाँ होती हैं। समसामयिक समाज का बोध, शब्द को शब्देतर कला में ढालना, व्यावसायिकता का ध्यान रखना आदि के साथ प्रस्तुति के धरातल पर निर्माता, निर्देशक, अभिनेता आदि के साथ संपर्क-सहयोग की अपेक्षा होती है। ये सारी चुनौतियाँ रचनाकार को सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ जोड़ती हैं। इन सारी चुनौतियों को सहजता के साथ स्वीकार करना तत्कालीन समाज व्यवस्था के कारण स्त्री को संभव नहीं था। आरंभिक काल में गद्य और पद्य के क्षेत्र में कम मात्रा में वह लेखन कर रही थी लेकिन नाटक के क्षेत्र में उसका लेखन न के बराबर था। "उस काल में नाटक लिखना अथवा नाटक में काम करने के लिए अधिकतर महिलाएँ तैयार नहीं होती थीं। इस प्रकार का काम करने वाली कलाकार वर्ग की स्त्रियों की तरफ समाज अलग दृष्टि से देखता था। उसे कुलीन नहीं माना जाता था। ऐसी हालत में उच्च वर्ग की शिक्षित स्त्री द्वारा नाटक लिखना अलग अर्थ रखता था।"[1]

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद साहित्य सृजन में महिलाओं ने अपना योगदान निश्चित रूप में दिया है मगर कवित्त और कथा साहित्य के क्षेत्र में। सुमन राजे के अनुसार एक बार कथा साहित्य को अपनाने के बाद महिला रचनाकार बहुत कम लगभग न के बराबर ही अन्य विधाओं की ओर गयीं। इसके ठोस सामाजिक और रचनात्मक कारण जरूर रहे होंगे। एक सूत्र तो निर्विकल्प रूप से स्वीकार किया जा सकता है और वह यह कि कथेतर गद्य खुले मैदानी गद्य है, इसीलिए महिला रचनाकारों ने उसकी ओर जाने का साहस कम किया है। कविता यदि दर्पण में देखकर पत्थर चलाना होता था तो कथा-साहित्य अपने रचे नाम रूपों को अपने प्रतिनिधि के रूप में उतार देता। लेकिन अन्य विधाएँ बीच की पर्देदारी को पसंद नहीं करती।"[2] नाट्य विधा बीच की पर्देदारी को नहीं स्वीकारती वह खुले मैदान की विधा है।

स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक के लगभग सौ सालों के हिन्दी नाट्य साहित्य के इतिहास में एकमात्र महिला नाटककार का नाम प्राप्त होता है। "भारतेंदु युग में उपलब्ध 'गोपीचंद' नाटक को हम एकमात्र ऐसा नाटक मान सकते हैं, जो किसी महिला ने लिखा है। उसकी लेखिका श्रीमती लाली देवी है।"[3] इस नाटक पर टिप्पणी करते हुए डॉ. सुशीला धीर ने लिखा है- "इसकी लेखिका तत्कालीन नाट्य परंपराओं से परिचित होते हुए भी उससे हटकर नए प्रयोग का प्रयास करती है। जैसे नाटक में लोकशैली का प्रयोग, गीतों में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का प्रयोग तथा पौराणिक कथा होते हुए भी स्त्री विमर्श का स्पर्श है।"[4]

गोपीचंद

सन1896 में जैन यन्त्रालय लखनऊ से प्रकाशित इस नाटक का कथानक गोपीचंद राजा के संन्यास लेने की घटना के साथ पत्नियों की भावदशा पर केन्द्रित है। गोपीचंद के दो पत्नियाँ थीं। प्रथम पत्नी सुलक्षणा और द्वितीय कुमुदा। गोपीचंद के संन्यास ले लेने पर कुमुदा का मर्मस्पर्शी विलाप इस नाटक की विशेषता है।

यह ऐसा सामाजिक नाटक है जिसमें राजा के संन्यास लेने पर उसकी दोनों पत्नियों का पारस्परिक प्रेम भाव दिखाया गया है। नाटककार की यह नारी विषयक सोच उसके उदात्त रूप को अभिव्यक्त करती

केरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा की मुख पत्रिका

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व समीक्षा समिति

प्रो.(डॉ). एन.रवींद्रनाथ

प्रो.(डॉ). सुधा बालकृष्णन

प्रो.(डॉ.) आर. जयचन्द्रन

परामर्श मंडल

डॉ.तंकमणि अम्मा एस

डॉ.लता पी

डॉ. रामचन्द्रन नायर जे

प्रबन्ध संपादक

गोपकुमार एस (अध्यक्ष)

मुख्य संपादक/संपादकीय दायित्व

प्रो.डी.तंकप्पन नायर

संपादक

डॉ. रंजित रविशेलम

संपादकीय मंडल

सदानन्दन जी

श्रीकुमारन नायर एम

प्रो.रमणी वी एन

चन्द्रिका कुमारी एस

एल्सी सामुवल

आनन्द कुमार आर एल

प्रभन जे एस

अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पुष्प : 59 दल : 9 अंक: दिसंबर 2022

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

स्व. कुन्नुकुषी कृष्णनकुट्टी : एक लघु परिचय - अधिवक्ता मधु.बी 6

अतुल्य को तुल्यता का ऊहापोह-मुक्तिबोध और के.जी.शंकर पिल्लै का काव्य संदर्भ - मधु वासुदेवन 7

फ्रेड्रिक जेमेसन और उनका 'लेट केपिटलिज़्म'-डॉ. सोफिया राजन 11

सतीशबाबु पय्यन्नूर द्वारा रचित 'अमरूद का पेड़' : एक समीक्षा - डॉ. एस.तंकमणि अम्मा 14

नारी मुक्ति के नए प्रसंग - डॉ. अमलाकुमारी.बी 16

सुषम बेदी के कथा-साहित्य में नारी मन का अंतर्द्वंद्व' गोपिका.जी.जी 18

स्त्री मुक्ति की दास्तान : अनामिका का 'दस द्वारे का पिंजरा' आर्या पी.मणि 21

प्रतिरोध का दलित सौंदर्यशास्त्र - निर्मला पुत्तुल की रचनाओं में डॉ.ए.एस.सुमेष 26

दीपावली : देश विदेश में - डॉ.लता.डी 28

समसामयिक हिंदी कविता में पर्यावरण सतर्कता- डॉ.वीणा.जे 30

कृष्णा सोबती के चुने गए उपन्यासों में नारी विमर्श डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल. 34

राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में शहरी जीवन की रौनक और हलचल - सुजा मोल.एम 38

दूनी गाँठ की गठरी - मूल : के.एल. पॉल अनुवाद : प्रो.डी.तंकप्पन नायर व अधिवक्ता मधु.बी. 41

मुखचित्र : स्व. सतीशबाबु पय्यन्नूर

कृष्णा सोबती के चुने गए उपन्यासों में नारी विमर्श

डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल.

हिन्दी महिला लेखन ने पूरे भारतीय समाज के जीवन को खासकर नारियों के जीवन को बड़ी सजगता के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश की है। उन्होंने नारी जीवन की सारी खामियों और खूबियों को सच्चाई के साथ अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है।

महिला- लेखन दरअसल लेखन की परिव्याप्ति का घेरा खुलने और जीवन की तस्वीर को पूरे होने का साक्ष्य है। समकालीन महिला रचनाकारों ने पारिवारिक पृष्ठभूमि को छोड़कर स्त्री की अस्मिता, स्त्री की पहचान, स्त्री की शक्ति, स्त्री की लड़ाई, तथा स्त्री से जुड़े हुए तमाम सवालों को लेकर साहित्य सृजन शुरू किया। इस समय की महिला लेखिकाओं ने स्त्रियों की भीतरी और बाहरी तकलीफों की सच्ची अभिव्यक्ति दी। इसमें स्त्री अस्मिता को एक नई पहचान देने के साथ- साथ संवेदना और अनुभव के दायरे को भी बढ़ाया गया।

हिन्दी उपन्यासों की विकास परंपरा में कृष्णा सोबती का योगदान अद्वितीय है। वे व्यक्तिपरक मूल्यों की लेखिका है। उन्होंने स्त्री- पुरुष के यौन आकर्षण तथा कामवासना, औद्योगिक तथा दफ्तरों में होनेवाला नारी शोषण, पारिवारिक संबंधों का विघटन आदि विषयों पर अधिक ज़ोर दिया। पुरुष प्रधान भारतीय समाज में नारी अनंत काल से शोषित रही है। इसीलिए कृष्णाजी नारी स्वतंत्रता की प्रबल समर्थक रही है। वे चाहती हैं कि समाज की जर्जर और रूढ़ मान्यताओं के विरुद्ध संघर्ष करते हुए भारतीय नारी आत्मसम्मान का जीवन व्यतीत करें। इसलिए उनके उपन्यास की नारियाँ शिक्षा दीक्षा पर ज़ोर देकर निरंतर संघर्ष करती हुई आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होकर स्वालंबन भरा जीवन जीना चाहती है। कृष्णाजी का समग्र साहित्य उनके अनुभव की उपज है। स्वयं एक संवेदनशील नारी होने के कारण स्वाभाविक रूप से उनके उपन्यासों में नारी चित्रण को अधिक स्थान मिला है। उन्होंने वही लिखा है जिसे भारतीय नारी जी रही है, भोग रही है और उससे छुटकारा पाने के लिए प्रयास भी कर रही है। अनुभूति की गहरी, सूक्ष्म और कलात्मक अभिव्यक्ति ही कृष्णाजी के उपन्यास साहित्य की खूबी रही है। इस दृष्टि से कृष्णा सोबती के उपन्यास अधिक महत्वपूर्ण है। 'डार से बिछुडी', 'मित्रो मरजानी', 'सूरजमुखी अँधेरे के', 'ज़िन्दगीनामा', 'समय सरगम', 'यारों के यार' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

डार से बिछुड़ी (1958)

यह कृष्णाजी का पहला उपन्यास है। इसमें परंपराओं और रूढ़ियों से जकडी एक नारी की कथा है। उन्होंने इस उपन्यास में नारी मन की करुणा, कोमल भावनाओं, आशाओं एवं आकांक्षाओं और उनके नष्ट हो जाने पर उसके हृदय में उभरते हाहाकर की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति की है। 'पाशो' इसका मुख्य पात्र है। माँ के अन्तर्जातीय विवाह होने के कारण

ISSN - 2320 9…
पुष्प : 60 दल : 3 अंक: जून 2023

केरलज्योति
केरल हिंदी प्रचार सभा की मुख पत्रिका
(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व समीक्षा समिति
प्रो.(डॉ). एन.रवींद्रनाथ
डॉ. के.एम. मालती
प्रो.(डॉ). जयश्री.एस.आर
प्रो.(डॉ.) आर. जयचन्द्रन

परामर्श मंडल
डॉ.तंकमणि अम्मा एस
डॉ.लता पी
डॉ. रामचन्द्रन नायर जे.

प्रबन्ध संपादक
गोपकुमार एस (अध्यक्ष)

मुख्य संपादक/संपादकीय दायित्व
प्रो.डी.तंकप्पन नायर

संपादक
डॉ. रंजित रविशैलम

संपादकीय मंडल
सदानन्दन जी
श्रीकुमारन नायर एम
प्रो.रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5
डॉ. वेल्लायणी अर्जुनन : एक लघु परिचय - अधिवक्ता मधु.बी 6
मानस कैलास मूल : मंजु वेल्लायणि
अनुवाद : प्रो. डी. तंकप्पन नायर व डॉ.रंजीत रविशैलम 7
मतदाता (कविता) - डॉ.नवीना.जे.नरित्तूक्किल 8
मृत्यु के इस पार और उस पार
(कुंवर नारायण एवं पी.रविकुमार का तुलनात्मक चिंतन)-
डॉ. मधु वासुदेवन 9
'आंगन की चिड़ियाँ' में नई पीढ़ी की मानसिकता में आए बदलाव
डॉ. आषा.जी 14
"द्रोणाचार्य एक नहीं" में अभिव्यक्त दलित चेतना - डॉ. जयश्री.ओ 16
स्त्री संघर्ष : केदारनाथ सिंह की कविताओं में - कीर्ती.एस 20
सुशीला टाकभौरे की 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में दलित नारी संघर्ष
पद्मप्रिया.वी 24
युवा पीढ़ी (कविता) - ज्योति चेल्लप्पन 27
मानवीय संबंधों का यथार्थवादी चित्रण भीष्म साहनी
की कहानियों में - डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल 28
मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में नारी-संवेदना-रिने मरिअम अब्रहाम 33
संग समय के साथ चल (कविता)- श्रीनिथी शिवदासन 35
दलित साहित्य : अवधारणा एवं अनुशीलन - दिव्या.एम.एस 36
समकालीनता को पुनर्भाषित करती मंडलोई जी की कविताएँ
केसरबेन राजपुरोहित 38
'पहली पड़ाव' उपन्यास में सामाजिक पक्ष की अभिव्यक्ति
डॉ. प्रियाराणी.पी.एस 42
नासिराशर्मा की कहानियों में नारी अस्मिता के प्रश्न - डॉ.वीणा.जे 47
कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में चित्रित नारी - सुलोचना. के 50
उत्तराधुनिक स्त्री की आशा और आशंकाएँ
देवयानमा (आत्मकथा)
मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा, अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना 53

मुखचित्र : स्व. डॉ. वेल्लायणी अर्जुनन

मानवीय संबंधों का यथार्थवादी चित्रण भीष्म साहनी की कहानि...

डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य को जिन रचनाकारों ने अपनी सार्थक रचनाशीलता के माध्यम से एक व्यापक फलक प्रदान किया, उनमें भीष्म साहनी का महत्वपूर्ण स्थान है। समाज में क्या हो रहा था,क्यों हो रहा था,, किसके उपर हो रहा था आदि सभी बातों को साहनी ने अपने कथा-साहित्य में उकेरा है। उनकी सभी रचनाओं में भी समाज का एक यथार्थवादी चित्रण हमें देखने को मिलता है। भीष्म साहनी ने स्वयं लिखा है- "साहित्य के क्षेत्र में भी मेरा अनुभव वैसे ही स्पष्ट और सीधे-सादे रहे, जैसे जीवन में। मैं समझता हूँ -अपने से अलग साहित्य नाम की कोई चीज भी नहीं होती,जैसा मैं हूँ, वैसे ही मैं रचनाएं भी रच पाऊँगा मेरे संस्कार,अनुभव, मेरा व्यक्तित्व, मेरी दृष्टि सभी मिलकर रचना की सृष्टि करते हैं। इनमें से एक भी झूठ हो, तो सारी रचना झूठी पड़ जाती है।"[1]

यथार्थ समाज और देश के इतिहास से जुड़ी हुई वस्तु है जो मनुष्य को अपने देश व समाज के प्राचीन इतिहास की सर्वोत्तम परंपराओं से भी जोड़ता है तथा उससे शक्ति एवं प्रेरणा लेकर आज की वास्तविकताओं को उद्घाटित करके इतिहास के आगे ले जाती हैं। वस्तुतः यथार्थवाद एक गहरी सौंदर्यमूलक, संवेदनात्मक एवं ऐतिहासिक दृष्टि होती है, जो एक ओर रचनात्मक स्तर पर अपने इतिहास को मनुष्यता के विकास से जोड़ती है और दूसरी ओर समसामयिक समाज की आशा-आकांक्षाओं, दुख, पीड़ा, अभाव, अन्तर्विरोध, जिजीविषा, संघर्षों तथा उसकी जीत और पराजयों के चित्रण में भी परिवर्तन को प्रगतिशी... शक्तियों का अन्वेषण करती है औ... उनको बल प्रदान करती है।

समकालीन कहानीकारों में भी... ऐसे कहानीकार हैं, जिन्होंने जनसामान्य ... और संघर्ष का यथार्थ चित्रण अपनी का... किया है। वे जीवन भर एक आम आदमी की ... से जीते रहे, इसलिए इनकी कहानियाँ ... पीडति,शोषित,दलित और मजदूरों के जीवन के ... के साथ जुड़ी रहीं। वर्तमान जीवन की वास्त... को इन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित कि... वस्तुतः जीवन के यथार्थ को ही भीष्मजी ने म... माना। उनकी कहानियाँ जिस यथार्थ का अ... करती है, वे प्रायः रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटन... माध्यम से चित्रित करते हैं।अपनी आँखों से ज... देखा और अनुभव किया उनको भीष्म जी ने ... कहानियों द्वारा चित्रित किया है। इसके अलावा वि... की त्रासदी के साथ टूटते मानवीय मूल्यों, घुटन,बि... ,जीवन की अकुलाहट, छ्टपटाहट, पारिवारिक ... का बिखराव, स्त्री-पुरु ष संबंध,नारी शोषण ... निम्न तथा मध्यवर्गीय पारिवारिक समस्याओं क... जीवन्तता के साथ अपनी कहानियों में उकेर... प्रताप ठाकुर की राय में भीष्म साहनी की रचन... यथार्थवाद एक ओर सामाजिक जीवन ... वास्तविकताओं को प्रभावशाली रूप प्रदान करत... दूसरी ओर चेतना का संस्कार देता है। इनके ...

शोध सरोवर पत्रिका

आरती, वघुतक्काडु, तिरुवनंतपुरम-695 014, केरल राज्य।

RNI No. KERHIN/2017/70008 ISSN No.2456-625 X

वर्ष 7 अंक 27 त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका 10 जुलाई, 2023

पीयर रिव्यू समिति :
डॉ.शांति नायर
डॉ.के श्रीलता
डॉ.वी.अशोक

मुख्य संपादक
डॉ.पी.लता

प्रबंध संपादक
डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

सह संपादक
प्रो.सती के
डॉ.एस.लीलाकुमारी अम्मा
श्रीमती वनजा पी

संपादक मंडल
डॉ.विन्दु.सी.आर
डॉ.पीना.यू.एस
डॉ.सुमा.आई
डॉ.एलिसबत जोर्ज
डॉ.लक्ष्मी.एस.एस
डॉ.धन्या.एल
डॉ.कमलानाथ.एन.एम
डॉ.अश्वती.जी.आर

इस अंक में

संपादकीय :

समय की विद्रूपताएँ और व्यक्ति-मन की बेचैनियाँ : डॉ. शान्ती नायर 6

आधुनिक जीवन बोध के परिप्रेक्ष्य में निर्मल वर्मा के कथा साहित्य का अध्ययन : डॉ. बीना जे 15

भारतीय भाषाएँ और नयी शिक्षा नीति : डॉ. पवन कुमार शर्मा 18

साम्राज्यवाद के खिलाफ गिरिराज किशोर के जूझते तेवर- 'असलाह' उपन्यास के विशेष परिप्रेक्ष्य में : डॉ.पूर्णिमा आर 21

'तीसरा लिंग विमर्श' के सन्दर्भ में 'तीसरी ताली' : डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल 24

वैदिक साहित्य में पर्यावरण चेतना : डॉ.सुजित.एन.तंपी 27

आधुनिक समय में शोषित बचपन : डॉ.विकास कुमार सिंह 30

'तुक' कहानी में चित्रित पारिवारिक घुटन : डॉ.पेर्लिन 34

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री-संघर्ष : अफीफा फातिमा शेक 37

मानवतावादी कवि धूमिल : डॉ.माजिदा एम 39

हिन्दी का वैश्विक महत्व : डॉ.प्रीति.के 43

'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी में उत्तराधुनिक समय की पहचान : डॉ.सी.बालसुब्रह्मण्यम 46

जयप्रकाश कर्दम की कविताओं में सामाजिक यथार्थ : दिनेश अहिरवार 48

यू जी सी से अनुमोदित पत्रिका

'तीसरा लिंग विमर्श' के सन्दर्भ में 'तीसरी ताली'

◆ डॉ.रीनाकुमारी बी.एल

प्राकृतिक रूप से विपरीत लिंग में जन्मे बच्चों के प्रति परिवार और समाज का नज़रिया उन्हें दूसरे लोक में धकेल देता है, जिसे समाज,'तीसरी दुनिया','थर्ड जेंडर','किन्नर','हिजड़ा' आदि के रूप में पहचानता है। आजकल विमर्श के तहत तीसरे लिंग को समाज की मुख्य धारा में प्रतिष्ठित कराने का प्रयास किया जाता है। इन्हें केंद्र में रखकर समाज, संस्कृति,परंपरा एवं इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए उनकी स्थिति पर मानवीय दृष्टि से विचार करने की प्रक्रिया ही 'तीसरा लिंग विमर्श' है। प्रदीप सौरभ का उपन्यास 'तीसरी ताली' एक समस्या प्रधान तथा किन्नरों के जीवन की विडंबनाओं को बतानेवाला उपन्यास है। इस उपन्यास में किन्नर समाज की व्यथा,पीड़ा, समस्या तथा उनके संपूर्ण जीवन को अत्यन्त बारीकी के साथ उपन्यासकार ने प्रस्तुत किया है।

बीज शब्द: किन्नर, लौंडेबाज, यौन शोषण, हिजड़ा, कुवागम मेला, यथार्थवादी,सामाजिकता ।

"अब मिली हमें भी एक नई पहिचान
हिजड़े,नपुंसक, छक्के, गाली की तरह,
दुनियाँ देती रही एक नया नाम,
हम हारे नहीं, हार मानी नहीं,
नहीं स्वीकार किया, बद्जुबानों से मिला मुकाम,
जीत ली हारी हुई बाजी हमने,
तब जाकर मिली है नई पहिचान ।
अब अपना एक नाम है, एक पहिचान है,
अब दुनियाँ और उसका स्वरुप बदल रहा है,
अब मैं हूँ, 'तृतीय लिंगी TheTransgender'
यही होगा अब हमारा,
स्थायी अस्तित्व और नाम,
अब तृतीय लिंगी है हमारी पहिचान,
अब मिली है हमको भी पहचान ।"[1]

पिछले कुछ दशकों में विचारधारा और चिन्तन की दुनिया में आये वैचारिक और अवधारणात्मक बदलावों ने 'अस्मिता' या 'अस्तित्व' की समस्याओं को समाज एवं साहित्य के केंद्र में खड़ा कर दिया, जिसके फलस्वरूप अनेक विमर्शों का जन्म हुआ जैसे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, पारिस्थितिक विमर्श, किन्नर विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि । रोहिणी अग्रवाल जी का कथन है- "किसी भी समस्या या स्थिति को एक कोण में न देखकर, उसे समग्रता में समझने की कोशिश करना और फिर मानवीय सन्दर्भों में निष्कर्ष प्राप्ति की चेष्टा करना विमर्श है ।"[2]

आजकल विमर्श के तहत तीसरे लिंग को समाज की मुख्य धारा में प्रतिष्ठित कराने का प्रयास किया जाता है । तीसरे लिंग के अंतर्गत हिजड़ा कही जानेवाली मानव-प्रजाति ही आती है । हिजड़ा से तात्पर्य उन लोगों से है जिनके जननांग का विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाया है । ये पुरुष होकर भी स्त्रैण स्वभाव के हैं । अर्थात् ये न पुरुष हैं न स्त्री । उनको पुरषों की जगह स्त्रियों के बीच रहने में सहजता महसूस होती है। वे न तो सम्बन्ध बना सकते हैं और न ही गर्भ धारण कर सकते हैं । यह समुदाय एक तरह से न्यूट्रल है। उनमें सभी यौनिकताओं का समावेश संभव है। अंग्रेजों ने इन्हें 'Transgender' कहकर पुकारा है। हिजड़ों की चार शाखाएँ हैं- बुचरा, नीलिमा, मनसा और हँसा। बुचरा जन्मजात हिजड़ा होता है। नीलिमा स्वयं बना हिजड़ा है।मनसा स्वेच्छा से शामिल तथा हँसा शारीरिक कमी तथा नपुंसकता आदि यौन न्यूनताओं के कारण बने हिजड़े हैं । इसके अलावा धन के लोभ में हिजड़े का स्वांग रखनेवाले भी होते है । इन्हें 'अबुआ' कहते हैं । डॉ.सिजेन्द्र प्रताप सिंह के अनुसार "हिजड़ा स्त्री या पुरुष जननांगों का स्पष्ट

केरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व समीक्षा समिति

प्रो.(डॉ). एन.रवींद्रनाथ
डॉ. के.एम. मालती
प्रो.(डॉ). जयश्री.एस.आर

पुष्प : 60 दल : 3 अंक: जून 2023

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

डॉ. वेल्लायणी अर्जुनन : एक लघु परिचय - अधिवक्ता मधु.बी 6

मानस कैलास मूल : मंजु वेल्लायणि
अनुवाद : प्रो. डी. तंकप्पन नायर व डॉ.रंजीत रविशैलम 7

मतदाता (कविता) - डॉ.नवीना.जे.नरित्तूक्किल 8

मृत्यु के इस पार और उस पार
(कुंवर नारायण एवं पी.रविकुमार का तुलनात्मक चिंतन)-
डॉ. मधु वासुदेवन 9

केरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका
(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व समीक्षा समिति
प्रो.(डॉ). एन.रवींद्रनाथ

पुष्प : 60 दल : 1 अंक: अप्रैल 2023

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

महान कलाकार एवं महान मनीषी इन्नॉसेंटः एक लघु परिचय
अधिवक्ता मधु.बी 6

आचार्य रामचंद्र शुक्ल - कविता के झरोके से
डॉ. मधु वासुदेवन 7

केरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व समीक्षा समिति

पुष्प : 59 दल : 9 अंक: दिसंबर 2022

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

स्व. कुन्नुकुषी कृष्णनकुट्टी : एक लघु परिचय - अधिवक्ता मधु.बी 6

अतुल्य की तुल्यता का ऊहापोह-मुक्तिबोध और
के.जी.शंकर पिल्लै का काव्य संदर्भ - मधु वासुदेवन 7

केरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका
(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व समीक्षा समिति
प्रो.(डॉ). एन.रवींद्रनाथ
प्रो.(डॉ). सुधा बालकृष्णन
प्रो.(डॉ.) आर. जयचन्द्रन

परामर्श मंडल
डॉ.तंकमणि अम्मा एस
डॉ.लता पी

पुष्प : 59 दल : 10 अंक: जनवरी 2023

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

बंगाल का नया राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस : एक लघु परिचय
अधिवक्ता मधु.बी 6

नब्बे के प्रो.डी. तंकप्पन नायर - **अधिवक्ता मधु.बी.** 7

जीवन संध्या की कातर कथा 'अकेले होते लोग' में
डॉ.पी. प्रतिभा 8

प्रगतिशील आलोचना के बहाने एन्टोनियो ग्राम्शी की छानबीन
मधु वासुदेवन 14

रामविलास शर्मा का संगीत-विमर्श : **मधु वासुदेवन** 11

नौटंकी शैली का इतिहास...: **ममता धवन** 30

अवध में अमीर ख़ुसरो के दो साल : **प्रदीप शर्मा ख़ुसरो** 38

श्रद्धांजलि

गोदार की सिने-कला का आकाश : **प्रताप सिंह** 20

साक्षात्कार

मेरे लेखन का केन्द्र है मनुष्य : **रमेश ऋतंभर** 34

(कथाकार चन्द्रमोहन प्रधान से बातचीत)

कविताएँ/ग़ज़लें

चार कविताएँ : **सुरेश सलिल** 25

दो कविताएँ : **राधेश्याम तिवारी** 26

दो कविताएँ : **पूनम सोनछात्रा** 26

चार कविताएँ : **मनोज मोहन** 27

तीन कविताएँ : **विवेक सत्यांशु** 28

पाँच ग़ज़लें : **विनय मिश्र** 29

रेस का घोड़ा : **हबीब**

बीहड़ : **राजेश जैन**

इस माह–75 व

सिंहल की भाषा : सुनि

संगीत आजक

आयोजनों का सुरीला

पत्रिका आजक

वक़्त से लड़ती हुई : प

मूल्यांकन

रागात्मकता में सिमटे उ

पोखरण की धरती पर

कबीर की कविताओं...

प्रेम के औदात्य की कवि

पुलिस विभाग की बायो

पुस्तक परिचय

कहानियाँ बलिदान की

योग विज्ञान : स्वरूप,

ISSN-0971-8478

आजकल स्थापित 1945

वर्ष : 78, अंक : 10
पूर्णांक : 932
फरवरी, 2023
माघ-फाल्गुन : 1944

प्रधान सम्पादक
राकेशरेणु

सम्पादक
फरहत परवीन

सम्पादन सहयोग
शुभ्रा सिंह

आवरण चित्र : अनुप्रिया
आवरण सज्जा : बिन्दु वर्मा
रेखाचित्र : सिद्धेश्वर

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार
सम्पादक
आजकल
प्रकाशन विभाग
कमरा नं. 601डी, सूचना भवन
सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड
नई दिल्ली-110003
दूरभाष : 011-24362915
ई-मेल : ajkalhindi@gmail.com
website : www.publicationsdivision.nic.in
फेसबुक : www.facebook.com/publicationsdivision
ट्विटर : @DPD_India
इंस्टाग्राम : @dpd_india

संयुक्त निदेशक (उत्पा
डी.के.सी. हृदयनाथ

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : 230 रुपये
(सामान्य डाक से)
434 रुपये
(रजिस्टर्ड डाक से)

हमारे विक्रय केन्द्र :